भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए २९ अगस्त से ०४ सितम्बर, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालय से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

अगस्त से सितम्बर	वास्तविक वर्षा (मिमी)								मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी)					सलाह
दिनांक	18 से 24	24	25	26	27	28	29	30	31	1	2	3	4	
पंजाब														पंजाब में कपास की फसल की स्थिति उत्साहजनक है| कपास पर्णकुंचन विषाणु ग्रेड-I से ग्रेड-III के मध्य है| कुछ खेतों में जीवाणु झुलसा देखा गया है| चूँकि फसल परिपक्वावस्था में प्रवेश कर चुकी है तथा नाशीकीटों की संख्या भी आर्थिक हानि स्तर से कम होने पर फसल पर छिड़काव की आवश्यकता नहीं है जिसका कोई आर्थिक लाभ भी नहीं मिलेगा| फरीदकोट, मुक्तसर तथा फाजिल्का जिलों में 119 गावों में किए गए सर्वेक्षण में सभी तीन रसचूषक कीट, यथा, सफेदमक्खी, जैसिड तथा फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम रिकार्ड की गई है| भटिंडा में 14 गावों में सर्वेक्षण किया गया,इनमें से लहरी गाव के दो स्थलों पर बीटी संकरों में सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई| सफेद मक्खी के एकान्तर पोषक फसलों पर सफेद मक्खी के समय पर प्रबंधन के लिए इसकी नियमित निगरानी करना आवश्यक है| भारी वर्षा अथवा सिंचाई के बाद यदि आकस्मिक मुरझान रोग आता है तो इसका प्रबंधन पंजाब कृषि
भटिंडा	23	0	4	0	10	70	34	6	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	10	4	3	25	3	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	3	4	0	36	1	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	10	0	0	0	0	17	0	3	0	0	0	
हरियाणा														
सिरसा	3.8	0	17	0	5	19	21	17	0	3	0	0	0	
हिसार	1.9	0	8	0	1	0	12	16	0	10	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	17	0	1	0	21	18	0	6	0	0	0	
राजस्थान														
हनुमानगढ़	0.6	0	5	6	3	3	32	17	5	4	3	0	0	
श्रीगंगानगर	3.6	0	6	1	0	10	17	0	5	4	3	0	0	
बांसवाड़ा	203	31	1	2	0	7	2	1	6	6	5	4	2	

											विश्वविद्यालय की सिफ़ारिशों के अनुसार 10पीपीएम कोबाल्ट क्लोराइड (10मिग्रा./ली पानी) का छिड़काव लक्षण दिखाई देने के कुछ घंटों के अंदर ही प्रभावित पौधों पर करें। हरियाणा में, सिरसा जिले में संवेदनशील जीनप्ररूपों पर सफेद मक्खी की संख्या वृद्धि रिपोर्ट की गई है। सफेद मक्खी की संख्या आरसीएच-650बीजी-II पर 9-18/3 पत्तियाँ (औसत संख्या 10.2/3पत्तियाँ) के मध्य;एचएस-6 पर 8-14/3 पत्तियाँ (औसत संख्या 17.6/3 पत्तियाँ); गंगानगर अगेती पर 14 से 21/3 पत्तियाँ(औसत संख्या 13.4/3 पत्तियाँ) तथा आरएस-2013 पर 10-17/3पत्तियाँ (औसत संख्या 16.0/3 पत्तियाँ) दर्ज की गई। आर्थिक हानि स्तर से कम संख्या पाई जाने पर फसल पर किसी भी कीटनाशक के छिड़काव की सिफ़ारिश नहीं की जा रही है। भारी वर्षा होने के पूर्वानुमान के कारण भी सफेद मक्खी की संख्या भारी वर्षा में कम हो जाने की संभावन है। जैसिड की संख्या 0-2/3 पत्ती तथा थ्रिप्स की संख्या 0 से 6/3 पत्ती के मध्य रही। कई स्थानों पर देसी कपास में गूलर की चित्तीदार सूँडी का प्रकोप देखा गया है। किसानों के खेतों में कपास पर्णकुंचन विषाणु के लक्षण भी देखे गए है। देसी कपास पर यदि चित्तीदार सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से अधिक होता है तो किसानों को स्पिनोसेड@60मिली/एकड़ की दर से फसल पर छिड़काव करें। किसानों को यह भी सलाह दी जाती कि अधिक वर्षा की स्थिति में खेतों में जलभराव न होने दें। हिसार में फसल सामान्य है तथा फलन अवस्था में है। सर्वे किए गए सभी खेतों में सफेद मक्खी तथा जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम है। कपास पर्णकुंचन विषाणु रोग किसानों के खेतों में हिसार, जींद, भिवानी, कैथल, महेन्द्रगढ़ तथा रिवाड़ी जिलों में नाममात्र से ग्रेड-III की रोग गंभीरता की स्थिति में दर्ज किया गया है। जीवाणु झुलसा रोग का प्रकोप नहीं देखा गया है।

														राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में फसल शीर्ष गूलर विकास अवस्था में प्रवेश कर रही है। जबरदस्ती गूलर प्रस्फुटन से बचने के लिए सप्ताह के दौरान कम-से-कम एक बार फसल की सिंचाई करने में सावधानी रखें। फसल स्वस्थ है तथा रोगों व नाशीकीटों का प्रकोप नहीं है।
उड़ीसा														फसल पुष्पन अवस्था में प्रवेश कर चुकी है। मानसून के अग्रवर्ती अवस्था में रहने के कारण बादलों का मौसम तथा भारी वर्षा की स्थिति बनी हुई है। खरपतवार नियंत्रण करने की आवश्यकता है। कली तथा गूलर झड़न को रोकने के लिए कपास मैन्युअल में दी गई जानकारी के अनुसार प्लानोफिक्स का फसल पर अनुप्रयोग करें। एफिड, जैसिड, सेमीलूपर तथा टिड्डों का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज किया गया है। गूलर की गुलाबी सूँडी की सक्रियता मॉनीटर करने के लिए फीरोमोन ट्रैप स्थापित करें।
कोरापुट	5.8	o	0	17	52	2	7	0	30	37	53	31	27	
कालाहांडी	7.6	o	18	9	19	0	4	1	28	26	33	9	26	
बोलांगीर	18	9.7	10	2	5	0	2	0	19	16	15	12	32	
गुजरात														फसल में विद्यमान खरपतवार कपास के रसचूषक कीटों के सहायक दिखाई दे रहे हैं। जैसिड का ग्रसन आर्थिक हानि संख्या से ऊपर (8 से 12/3 पत्तियाँ/पौधा), सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम (2से 3/3 पत्ती/पौधा), एफिड(चेंपा) की संख्या आर्थिक हानि सीमा से अधिक(19 से 23/3 पत्ती/पौधा) कुछ खेतों में रिपोर्ट किया गया। मिलीबग की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम पाई गई। सर्वेक्षण किए गए 05 गावों में बीटी संकरों में जैसिड तथा थ्रिप्स की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई, जिनमें दो गावों वादल तथा भियाडा के प्रत्येक के दो स्थलों से तथा जलंसार, थानियाना तथा भालगांव गावों के प्रत्येक के एक स्थान पर इन दोनों कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर अधिक दर्ज की
अमरेली	1.5	0.3	4	25	1	6	2	3	6	6	6	0	0	
भावनगर	8.4	3.4	6	23	2	1	26	7	3	6	5	0	0	
जामनगर	3.1	3.1	12	3	4	5	14	20	0	0	0	0	0	
राजकोट	1.4	1.3	16	5	7	13	12	5	0	0	0	0	0	
भरूच	5.3	1.4	2	8	11	4	1	2	17	8	10	0	0	
सबरकांठा	112	55	6	6	1	13	2	4	21	14	13	0	0	
सुरेन्द्रनगर	6.1	6.1	54	40	2	3	10	3	6	5	5	0	0	
अहमदाबाद	18	9.2	19	26	4	2	8	8	13	6	5	0	0	
वडोदरा	34	5.3	2	4	6	18	1	3	10	5	8	8	4	

पाटन	62	41	56	1	4	19	7	11	20	0	0	0	0	गई|जलंसार को छोड़कर पाँच गावों के सभी स्थानों पर गूलर की गुलाबी सूँडी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक(10%से 20% पुष्प ग्रसन) दर्ज की गई| कपास मैन्युअल के अनुसार सुरक्षात्मक उपाय करने की आवश्यकता है| किसी भी रोग का प्रकोप नहीं देखा गया| यदि पतंगों की संख्या कम है तो गुलाबी सूँडी के पतंगों को बड़े पैमाने पर पकड़ने के लिए किसानों को फीरोमोन ट्रैप फसल में स्थापित करने की सलाह दी जाती हैं|
मेहसाना	60	39	9	6	2	25	5	6	25	3	3	0	0	
मध्यप्रदेश														रस चूषक कीट, विशेषरूप से, जैसिड तथा सफेद मक्खी की संख्या लगभग सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में दर्ज की गई| कुछ क्षेत्रों में एफिड तथा थ्रिप्स का प्रकोप का प्रारंभ होना भी देखा जा रहा है| रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई जाने पर, किसान भाई कपास मैन्युअल में दिए गए नियंत्रण उपाय प्रारंभ करें| रोगों का प्रकोप दर्ज नहीं किया जा रहा है|
खरगोन	40	2	2	0	1	2	3	1	8	8	5	5	0	
धार	108	2.9	0	1	1	8	0	0	19	8	3	0	0	
खंडवा	39	9	0	0	0	25	0	10	10	11	6	6	3	
महाराष्ट्र														फसल गूलर विकास अवस्था में प्रवेश कर चुकी है| विगत 15 दिनों के सूखाकाल के कारण बारानी कपास में कुछ स्थानों में जहाँ वर्षा नहीं हुई है, फसल में मृदा नमी की कमी हो सकती है| मृदा के बेहतर वातायन के लिए अंत:सस्य क्रियाएँ की जा सकती हैं| यूरिया के अंतिम मृदा अनुप्रयोग की सिफ़ारिश की जाती है| अकोला के कड़ोशी, अंधार, सोवांगी तथा नवेगांव गावों के 2-3 स्थानों पर बीटी संकरों में जैसिड तथा फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| नांदेड के पिंपलगांव-महादेव तथा ज्वाला गावों के दो स्थलों पर सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| देलप, पिंपलगांव-महादेव, ज्वाला, ऊंचेगाव के प्रत्येक के 5 स्थलों पर तथा बेल्लोरी धानोरा गाव के 03 स्थलों पर
धुले	14	9	0	0	1	3	3	3	5	3	3	4	1	
नांदूरबार	27	13	4	2	2	0	4	1	5	2	5	3	2	
जलगांव	5.9	3.1	3	0	1	17	3	1	5	7	4	4	2	
अहमदनगर	0.7	0.1	0	0	5	0	6	1	8	15	25	20	6	
औरंगाबाद	1.1	0.1	1	0	0	16	0	0	4	6	5	6	0	
जालना	1.7	0	11	0	24	11	2	8	2	0	0	2	1	
बीड़	3.4	0	0	0	5	9	6	14	2	20	40	4	3	
नांदेड़	6	1.5	3	0	2	2	2	0	45	12	0	4	0	
परभणी	4.7	1.6	4	0	0	17	3	5	12	7	0	5	0	
हिंगोली	14	0.3	15	0	0	5	0	2	30	10	15	4	0	

बुलढाना	3.7	1.9	0	0	1	3	0	1	6	7	3	4	2	जैसिड तथा फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| डा. ब्रेंट, मल्लिका बीजी-II,जादू बीजी-II, ब्रह्मा बीजी-II, अजीत-155 बीटी संकरों पर 5 गावों में किए गए सर्वेक्षण में 2 से 5 स्थलों पर गूलर की गुलाबी सूँडी का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाया गया| राहुरी में साडे गोतुम्बे, आखाडा पिंपरी तथा अवघड गावों के क्रमश: 2,1,2 स्थलों पर फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| इस वेब-साइट में कपास पादप स्वास्थ्य मैन्युअल में सिफ़ारिश किए गए नाशीकीटों के प्रबंधन उपाय किए जा सकते हैं|
अकोला	7.3	6.2	1	0	0	1	0	0	5	3	0	0	0	
वासिम	15	14	1	0	0	1	2	6	5	5	0	0	0	
अमरावती	3.4	1.8	1	1	2	0	10	0	10	10	7	6	0	
यवतमाल	7.5	3.6	2	0	0	1	4	4	5	5	0	0	0	
वर्धा	5.7	5.6	0	0	0	3	0	9	4	2	0	0	0	
नागपुर	0.2	0.2	0	8	9	2	0	0	7	4	2	5	1	
चन्द्रपुर	11	7.4	7	7	5	1	0	6	8	2	1	2	2	
तेलंगाना														पूर्ववर्ती सप्ताह में भारी वर्षा होने के कारण खरपतवारों का प्रकोप बढ़ा तथा रस चूषक कीटों की संख्या-वृद्धि भी हुई| बादलों का मौसम रहने से कलियों तथा गूलरों के झड़न की रोकथाम के लिए बचावात्मक उपाय के रूप में प्लानोफिक्स का फसल पर छिड़काव करें|
आदिलाबाद	7.1	6.3	12	1	5	5	7	6	20	5	0	2	0	
वारंगल	6.4	6.1	4	8	7	2	14	5	28	15	10	6	7	
खम्मन	9.5	7.8	5	9	11	12	3	16	35	12	13	10	10	
कारिंगर	2.6	1.9	5	0	6	3	18	7	28	8	10	0	6	
नालगोंडा	0.3	0	3	22	3	32	25	8	35	10	12	8	10	
महबूबनगर	0.5	0.2	0	2	0	12	0	22	30	12	6	5	10	
आंध्रप्रदेश														गुंतूर जिले के 10 गावों में किए गए सर्वेक्षण में निदूमुक्कला, पोंनेकळलु, पेडापरिमि, मेडीकोंडुरु, श्रीपुरम, लिंगापुरम, तिम्मापुरम तथा लेमेल्ले, प्रल्लिपदु, यादलापडु प्रेत्यक गांव के 3 तथा 2 स्थलों क्रमशः पर जादू, एटीएम, भक्ति, पूजा, आरसीएच-659, राजा, शिनी बीटी संकरों पर फूलकीट (थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक नोट की गई| अधिकांश जिलों में गूलर की गुलाबी सूँडी का प्रकोप पाया गया जो अनंतपुर तथा कुड्डापा जिलों में 10-15 स्थानों पर आर्थिक हानि स्तर तक पहुँच गया| सामुदायिक आधार पर खेतों में प्रकोप स्तर
गुन्टूर	0.3	0	22	21	16	47	28	27	34	5	8	4	4	
प्रकासम	0	0	2	18	22	19	9	9	35	5	12	8	6	

कर्नाटक													
धारवाड़	14	5.6	0	1	2	0	1	0	15	17	21	20	14
हवेरी	16	8.5	2	8	0	3	1	1	19	24	25	14	12
मैसूर	4.4	0	0	3	3	0	1	2	2	4	5	2	1

का मोनीटरिंग(निगरानी) करने के लिए तुरंत फीरोमोन ट्रैपों की स्थापना करें| रस चूषक कीटों के नियंत्रण तथा गुलाबी सूँडी के पतंगों का अंड निक्षेपण रोकने के लिए पुष्पन अवस्था में 5% एन. अस. के. ई अथवा नीम तेल का फसल पर छिड़काव करें| गुलाबी सूँडी के आर्थिक हानि स्तर पर (8 पतंग/ट्रैप/रात्री सतत 3 दिनों तक पकड़ में आने पर अथवा एक वृद्धिशील सूँडी 10 पुष्पों अथवा 10 हरे गूलरों में) पहुँचने पर आवश्यकतानुसार कीटनाशकों का छिड़काव करें| पर्याप्त वर्षा होने अथवा पर्याप्त मृदा नमी होने पर फसल में पोषक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए नत्र तथा पोटाश उर्वरकों का पहला मृदा अनुप्रयोग करें| बीटी संकरों में नांदयाल में हुसैनापुरम, राजुपालेम गावों के क्रमश: 02 तथा 03 स्थानों पर फूलकीट (थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई है|

धारवाड़ तथा हवेरी जिलों में सूखा की स्थिति बनी रही| 70 से 80 दिनों की बीटी कपास में हल्की सिंचाई देने के बाद यूरिया 25 किग्रा/एकड़ तथा पोटेशियम 25 किग्रा/एकड़ तीसरी और अंतिम मात्रा के रूप में मृदा में दें| काकोल, सोमापुर तथा माराडगी गावों में प्रत्येक में 03 स्थलों पर रस चूषक कीटों में से फूलकीट (थ्रिप्स) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई| बंकापुर तथा वारदाहल्ली गावों के क्रमश: एक तथा तीन स्थलों में गुलाबी सूँडी की विद्यमानता बीजी-II संकरों में दर्ज की गई| हवेरी तथा धारवाड़ जिलों के कुछ इलाकों में गुलाबी सूँडी का प्रबंधन करने के लिए विशेष निगरानी तथा सावधानी के उपाय करने का सुझाव दिया जाता है|

तामिलनाडु													
पेरंबलुर	16	0	0	7	14	0	0	10	0.5	0	0	0	1
सलेम	33	10	0	17	25	0	1	0	0.5	1	1	0	0
त्रिची	2.2	0	0	2	8	3	2	12	1	1	0	0	0
विरडुनगर	14	0	3	0	0	0	0	1	1	1	0	0	0

अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में सूखा की स्थिति बनी रही। 15 से 20 दिनों की फसल में पादप विरलीकरण करने की सलाह दी जाती है। दस दिनों की फसल में रिक्त स्थानों को भरें। कपास की बुआई का कार्य जारी है। 25 दिनों की फसल में निराई का कार्य करें। खरपतवारों के अंकुरण को रोकने के लिए कपास के बीजों के स्थल-छिद्र-रोपण के बाद पेंडीमेथेलिन 30%एससी @1.0 ली./हे (3.3 ली वाणिज्यिक उत्पाद) का अंकुरण-पूर्व अनुप्रयोग करें।

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मौंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)